मार्च - 2010

समता हिन्दी

मासिक

✷ Vol - 4 ✷ Issue - 3 ✷ March - 2010 ✷ Pages 16 Rs. 10/-

My Dream Magazine Karyanirvahak Post Pg. No. 11

भारतीय समता हिन्दी प्रचार परिषद्

समता हिन्दी

मासिक

वर्ष ४, अंक-३ "हिन्दी प्रेमियों की श्रेष्ठ पत्रिका" मार्च - २०१०

गौरवनीय संपादक

डॉ. एस.एस. बाबु

संपादक

एस. चन्द्रशेखर

संयुक्त संपादक

एम. अनिलकुमार

कार्यालय

भारतीय समता हिन्दी प्रचार परिषद

सेंन्ट्रल आफीस, गुणदला, विजयवाडा-५२० ००४

फोन : ०८६६-२४५१६११

फैक्स : २४३९६९६

samatahindi@yahoo.com

सहयोग राशी

वार्षिक : १०० रुपये

विदेश में

एक अंक-ढाई यू.एस.डॉलर (US$2.5)

वार्षिक-पच्चीस यू.एस.डॉलर (US$25)

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी चन्द्रशेखर द्वारा सेंट्रल आफीस, गुणदला, विजयवाडा-५२००४ से प्रकाशित एवं शांति प्रिंटर्स और पब्लिषर्स गुणदला, विजयवाडा - ४ द्वारा मुद्रित

समता हिन्दी में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आमंत्रित

मैं हमेशा यह मानती हूं कि गलतियां किसी से हो सकती हैं । मैं इसका अपवाद नहीं हूं, लेकिन अगर आपने वह काम ईमानदारी से किया है तो आपको अपनी गलती स्वीकार करने में हिचक नहीं होगी । सबसे बुनियादी चीज है अपने सरोकारों के प्रतिबद्धता नहीं है और उसे पूरा करने की ईमानदारी नहीं है, तो आप कुछ नहीं कर पाएंगे । मेरी ताकत या अंदरूनी शक्ति का दूसरा आधार हमारे सहयोगी हैं । मैं उन पर भरोसा करती हूं कि बगैर भरोसे के कोई काम नहीं होता । जिन ताकतवर लोगों की खिलाफत हमें करनी है, वह अकेले संभव नहीं है । इसके लिए अपने सहयोगियों का भरोसा और ल्यापक समाज का भरोसा हासिल करना जरूरी है । यहयोगियों का भरोसा तो आप निजी रूप से भी हासिल कर सकते हैं, लेकिन समाज का भरोसा हासिल करने के लिए आपको खुद को प्रमाणित करना होगा । प्कमाणित आप तभी कर पाएंगे, जब आपने जो मुहिम शूरू की है, उसके प्रति ईमानदार रहें और उसे किसी तार्किक परिणति तक ले जाएं । इसे आप अपने सरोकारों की निरंतरता कह सकते हैं । यानी आपके काम में रिंतरता दिखनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि अभी आपने कुछ कहा और उसे अधूरा छोड़ कर अगले दिन कुछ और कहने लगे । निरंतरता और काम में तारतम्य जरूरी है । अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो आपकी पूरी जंग खत्म हो जाएगी ।

हम है आपके
समता हिन्दी परिवार

संपादक

(एस.चन्द्र शेखर)

कंजूस का दृश्य

दिल्ली शहर में एक बड़ा ही मक्खी चूस रहता था कठिन परिश्रम करने पर भी जो कुछ उसे मिलता था उसके थोड़े में अपना पेट भरता तथा बाकी जमा करता था । इस तरह उसके पास कई जवाहरात हो गए थे उसका रहन-सहन ऐसा था कि लोगों को सहसा विश्वास ही नहीं हो सकता था कि इसके पास जवाहरात होंगे। उसका घर एक मामूली फूंस की झोपड़ी थी । जिसमें एक टूटा फूटा छोटा सा एक सन्दूक मुमकिन है बाबा आदम के जमाने की थी । उसी नें अपने जवाहरों की कथरी गुदरों में छिपाये रक्खे। दैवयोग से एक दिन उस फूस की झोंपड़ी में आग लग गई। कंजूस यह देशकर दहाड़ मारकर रोने लगा। उसका शोर सुनकर उसके अड़ोस पड़ोस के लोग आ गये और आग बुझाने में मदद देने लगे किन्तु वह बुझने के बजाय अधिक बढ़ गई । आग की लपटों को बढ़ता देखकर कंजूस और भी जोरों से चिल्ला चिल्ला कर रोने लगा। उसका रोना सुनकर उसके पास ही एक स्वर्णकार उसको डांट कर बोला कि एक कांसे की कढाई के लिए क्यों जान दे रखा है ।

कंजूस यह सुनकर बोला- भाई तुम तो कढ़ाई को जलते देश रहे हो किन्तु मैं तो अपने जवाहरात को देख रहा हूँ । यह सुनकर स्वर्णकार बोला कि वह धन कहाँ छिपा है? कंजूस ने उंगली के इशारे से उस स्थान को बतला दिया । जहां सन्दूक था । स्वर्णकार के जी में लालच समा गया वह बोला कि यदि में जवाहरात को बाहर निकाल लाया तो अपने मनमानी चीज तुम्हें देकर बाकी रकम ले लूंगा । अध तजसिंह बुध सर्वस जाता यह ख्याल कर कंजूस ने स्वर्णकार को इजाजत दे दी । करता भी क्या कुछ भी न तो थोड़ा पाना अच्छा है।

स्वर्णकार भी अपनी जान जोखों में डाल लालच वश धधकती हुई अग्नि में कूद पडा और सन्दूक लिए बाहर आया। जब आग शान्त हुई तो सुनार ने कंजूस को केवल सन्दूक देकर बाकी जवाहरात खुद ले लिए यह देख कंजूस ने आनाकानी की तो स्वर्णकार बोला कि तुमने पहले ही मान लिया था जो मैं चाहूं वह तुम्हें दे दूं। कंजूस ने नम्र होकर कहा कि भाई साहब आपने जान पर खेलकर ऐसा उपकार किया है, अतएव आप आधा धन ले लो बाकी आधा मुझे स्वीकार है स्वर्णकार रपटकर बोला कि मेरे तेरे बीच पहले ही शर्त हो चुकी थी कि मैं जो चाहूं उसे तुझे दे दूं अब चालाकी से काम नही चलेगा ।

बात दोनों में बढ़ गई कंजूस ने बहु तेरा प्रयास आधा जवाहरात पाने का किया अन्त में लाचार हो बादशाह के यहां नालिस की। बादशाह ने पेचीदा मामला समझ बीरबल को बुलाया और सारा हाल दोनों से बयान करवाया-थोड़ी देर के लिए बीरबल विचार मग्न हो गये बाद में बीरबल ने स्वर्णकार से पूछा कि तुम दोनों के बीच क्या शर्त तय हुई थी? स्वर्णकार बोला गरीब परवर! हम दोनों के बीच यह शर्त तय हुई थी कि उस धधकती आग में प्रवेश कर जो जवाहरात वाली सन्दूक को निकाल लायेगा वह जो पसन्द करे दूसरे को देवे बाकी आप लेवे। यह सुनकर बीरबल ने कंजूस से पूछा कि जो बाते स्वर्णकार कहता है क्या सही है। कंजूस ने स्वीकार किया तब बीरबल ने कहा फिर तुम क्यों नहीं निपटारा कर लेते। जब शर्त हो चुकी थी तो जो कुछ वह देता है ले लो। कंजूस ने दुखी होकर कहा कि आलीजाह! वह तो केवल सन्दूक मुझे देकर सब जवाहरात खुद ले रहा हैं ।

बीरबल ने स्वर्णकार को बुलाकर कहा कि तुम्हें कौन सी चीज पसन्द है। स्वर्णककार बोला हुजूर जवाहरात बीरबल यह सुनकर बोले तो फिर बात इतनी क्यों बढ़ाई । जवाहरात उसे वापिस दे दो। सन्दूक तुम ले लो ।

स्वर्णकार अवाक सा रह गया बीरबल बोला कि तुम्हीं ने तो अपनी शर्त में बतलाया कि जो मैं पसन्द करूंगा वह इन्हें दे दूंगा। सो तुमने जवाहरात पसंद करे हैं अतएव इन्हें दे दो बाकी सन्दूक तुम ले लो । स्वर्णकार कुछ ने बोल सका। वह जानता था कि बीरबल के न्याय का अस्वीकार करूंगा तो जेल की हवा खानी पड़ेगी ज्यादा लालच का यही नतीजा होता है यह सोचता हुआ खाली सन्दूक लेकर स्वर्णकार घर को लौटा । कंजूस को उसके जवाहरात मिल गये, उसे लेकर बीरबल की चतुराई से बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि उन्होंने दूध और पानी का बिलकुल अलग-अलग कर दिया था । ⌘⌘⌘

MY DREAM
it's my school magazine....

Print is Powerful

Shanti Printers & Publishers

23 Years of Service to our people

We

We are service driven.
We embrace change.
We strive for innovation publishing
We aspire to excellence in quality
We are successful because of our people

My Dream

IT'S MY SCHOOL MAGAZINE

For LK.G., U.K.G. & 1st Std.

- Alphabets
- Numbers
- Shapes
- Colours
- Day Moral Knowledge
- Festivals
- Sounds
- Activities
- Competitions for Kids

Respected Sir/Madam

Seasons Greetings from Shanti Printers and Publishers.

Shanti Printers and Publishers is a well established publishing Company with a nation wide network in printing, publishing and supplying books and stationery to educational institutions.

Established in 1970, Shanti Printers and Publishers has grown over the years and today stands tall as one of the most reputed publishing houses in the south of India with a strong network across the towns and cities around India.

We are living in the information technology age where constant upheaval and change is the order of the day. To succeed in this environment of uncertainty, it is imperative that a student's skills are fine tuned to face the challenges of the future with confidence and zeal.

Keeping the above requirements in view, Shanti Printers and Publishers, which is well versed in the educational system and the requirements of students, has come up with an innovative magazine 'My Dream' which provides students with the necessary educational, recreational and psychological requirements that are essential for all round development.

'My Dream', a monthly magazine compiled by educational experts and child psychologists, is published in different volumes keeping in view the requirements of specific age groups. At present Volume I for the students of LKG, UKG AND IClass is to be released into the market from July, 2010.

'My Dream' is a complete school magagine with a wide variety of articleswhich would be of immense help to the student community.

'My Dream' is your school magazine. Your school would be allotted the first two pages of the magazine to publish your content free of cost. Shanti Printers and Publishers would be happy to print whatever content you submit in these two pages free of charge. Moreover, the edition to your school would be published with the name of your institution so technically 'My Dream' would be your school magazine. This would certainly elevate the already renowned name that your institution possesses. In addition to this 'My Dream' would be an excellent platform of advertisement for your institution.

Shanti Printers and Publishers would be happy to sponsor a surprise gift with each copy of 'My Dream' and 2 prizes would be awarded each month to the winners of the competitions in the magazine.

Shanti Printers & Publishers

trust

Sister concern of
Samata Hindi Prachar Vibhag

My Dream

IT'S MY SCHOOL MAGAZINE

VIJAYAWADA I HYDERABAD I CHENNAI I BANGALORE I MUMBAI

परीक्षा में नकल का सहारा न लें

आए दिन समाचार पत्रों मे हजारों छात्र-छात्राओं के व्यक्तिगत अथवा सामूहिक नकल करते हुए पकड़े जाने के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं । पहले के समय में नगण्य साहसी परीक्षार्थी ही नकल करते थे, लेकिन अब तो नकल करना आम बात हो गई है। कहीं पर चोरी से तो कहीं सीना-जोरी से नकल करने का क्रम आज तर जारी है ।कई परीक्षा केंद्रों में तो मिलीभगत से सामूहिक नकल करना कोई अश्चर्य की बात नहीं रही है । आज के प्रगति शील और वैज्ञानिक युग में आये दिन नकल करने के नए-नए तरीके ईजाद होने लगे हैं ।

नकल एक अपराध

जिस प्रकार रिश्वत लेना और देना दोनों ही अपराध हैं, ठीक वैसे ही नकल करना और कराना दोनों ही अपराध माने गये हैं । आज-कल तो ऐसे हालात हो गए हैं कि नकलचियों से निपटने के लिए पुलिस की चौकियां विद्यालय परिसरों में स्थापित करनी पड़ती हैं । परीक्षा मंडल के अधिकारी नित नए-नए उपाय व नए-नए नियम लागू कर शक्तिशाली उड़नदस्ते भी परीक्षा केंद्रों पर भेजकर अपना अभियान जारी रखते हैं । इसके बावजूद भी नकल करने वाले कुछ परीक्षार्थी नकल करने से बाज नहीं आते हैं ।

अकल का महत्त्व

वास्तव में देखा जाए तो परीक्षा लेने का तात्पर्य यही है कि विद्यार्थी परीक्षाएं नकल से नहीं बल्कि अकल से पास करें। यह नहीं भूलना चाहिए कि 'नालेज इज पावर' अर्थात् ज्ञान एक शक्ति है। यह शक्ति नकल से कभी प्राप्त नहीं की जा सकती । परीक्षा में अकल का उपयोग कर पास होने वाले छात्र ही प्रतिष्ठा पाते हैं, जबकि नकलची छात्र चारों तरफ से दुत्कारे जाते हैं । नकल की नाव में बैठकर तो छात्र समस्याओं की मझधार में फंस जाते हैं, जबकि अकल की नाव में बैठे ज्ञान की पतवारों से लहरों को काटते हुए किनारे तक जा पहुंचते हैं।

नकल से हानियां

परीक्षा आयोजन परीक्षार्थी की बौद्धिक क्षमता के आकलन के लिए किया जाता है । लेकिन यदि वह किसी और की नकल करके उत्तर दे दे, तो वह भले ही परीक्षा उत्तीर्ण कर ले, लेकिन उसकी बुद्धि का विकास कैसे संभव होगा । भले ही कोई परीक्षार्थी ऐसा भी मिल जाए, जो हर कक्षा में नकल के सहारे उत्तीर्ण होता रहा हो । लेकिन जब वह वास्तविक जीवन में प्रवेश करता है, तो अपनी असफलता पर रोता ही है और उसके हाथ कुछ भी नहीं लगता । जब नकल करने वाले विद्यार्थी श्रेणी पाकर हो जाते हैं, तब परिश्रमी विद्यार्थी के मन में बहुत ठेस पहुंचती है ।

परीक्षा के दिनों में नकल करने वाले छात्र 'चिटें' बनाने में लग जाते हैं । वे यह नहीं सोचते हैं कि इसमें उनका कितना समय बर्बाद हो रहा है । जितना समय वे नकल की चिट या पर्ची बनाने में लगातेहैं, उतना ही समय यदि वे प्रश्नों के उत्तर समझने व याद करने में लगाएं, तो परीक्षा भवन में शांत चित्त से प्रश्न पत्र आसानी से हल कर सकते हैं ।

इसमें संदेह नहीं कि नकल की चिटें या परचियां लिख कर ले जाने वाले छोत्रों के मन में परीक्षा हाल में पकड़े जाने का भय हमेशा लगा रहता है । इसी कारण वे निश्चिंत होकर प्रश्न पत्र हल नहीं कर पाते । नकल की परची निकालने की जुगाड़ तथा मौके की तलाश में व्यर्थ ही अपना काफी समय नष्ट कर देते हैं । अतः जिन प्रश्नों के उत्तर वे अच्छे ढंग से दे सकते थे उन्हें भी हड़बड़ाहट में नहीं लिख पाते हैं । यदि नकल करते हुए पकड़े गए तो अध्यापकों और छात्रों के बीच बेइज़्ज़त होने के अलावा ऐसे छात्रों के आगमी परीक्षाओं में बैठने की अनुमति न मिलने से उनका सारा कैरियर ही चौपट हो सकता है ।

अकसर देखने में आता है कि जो विद्यार्थी वर्ष भर कक्षाओं में पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते और सारा समय मौज-मस्ती में गुजर देते हैं, वे ही परीक्षा के सिर पर आ जाने से उत्तीर्ण होने के लिए नकल का मार्ग अपनाते हैं, ताकि मां-बाप और परिचितों की निगाहों में न गिरें ।

नकल करना एक निंदनीय कृत्य है, इसलिए नकल न करें । लेकिन किसी मजबूरी वश यदि नकल करते हुए पकड़े जाएं, तो शिक्षकों से माफी मांगने में तनिक भी संकोच न करें । जो हो गया उससे बचने के लिए अपने व्यवहार में कटुता न लाएं अन्यथा अधिक नुकसान भुगतना पड़ सकता है । अभद्र व्यवहार और बाहर देख लेने की धमकी देना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है । अतः इस मामले में नम्रता से ही काम लेने में भलाई है ।

अकल का सहारा लें

इसमें कोई दो मत नहीं कि नकल करके मेरिट लिस्ट में स्थान कभी नहीं पाया जा सकता है । तीन घंटे में पूरे प्रश्नों के जवाब वही परीक्षार्थी अच्छी तरह से दे सकता है, जिसे पूरे विषय का ज्ञान है । परची, चिटों के बल पर पूरे प्रश्नों के उत्तर लिखना यूं भी संभव नहीं है । निरीक्षकों का भय आपको जो कुछ भी याद है, उसे भी भुला देगा । याद रखें कि परीक्षा में नकल का सहारा न लेकर पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी बुद्धि का सहारा लेना अधिक लाभप्रद होता है । परिश्रम द्वारा अर्जित अपने ज्ञान के भरोसे ही मेरिट लिस्ट में परीक्षा उत्तीर्ण करना गौरव की बात है । अतः सदैव अपने परिश्रम और आत्मविश्वास से परीक्षा दें और अपने को इस योग्य बनाएं कि आपका परीक्षाफल मेरिट में हो । ⁂

मानव विज्ञान

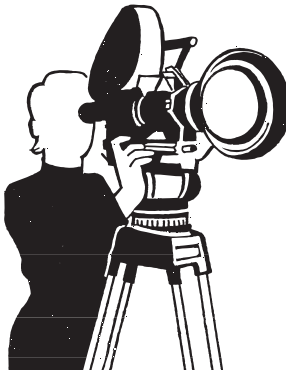

◆ मनुष्य के शरीर में ***दो सौ छः हड्डियाँ*** होती हैं ।

◆ मनुष्य का हृदय एक मिनट में ***बहत्तर*** बार धड़कता है ।

◆ मनुष्य के शरीर की जिन नाड़ियों में खून बहता है उन्हें ***धमनी*** कहते हैं।

◆ मनुष्य की धमनियों में रक्त की गति ***सात मील*** प्रति घन्टा है।

◆ मनुष्य के शरीर में उसके वजन का ***छः से आठ*** प्रतिशत खून होता है ।

◆ मनुष्य के शरीर में जल की मात्रा उसके वजन का ***सत्तर प्रतिशत*** होती है ।

◆ मनुष्य के अस्थिपिंजर में ***बारह जोड़ी पसलियाँ*** होती हैं ।

◆ मनुष्य के शरीर की सबसे बड़ी हड्डी ***जंघास्थि*** (फीमर) होती है उस हड्डी की लम्बाई मनुष्य की ***सत्ताइस प्रतिशत*** होती है ।

◆ मनुष्य के शरीर की सबसे छोटी हड्डी ***स्टेप्स*** होती है । यह हड्डी कान में पायी जाती है ।

◆ मनुष्या के शरीर का तापमान **98.4** ***अंश फारेनहाइट*** होता है।

◆ मनुष्य के मस्तिष्क का वजन **3** ***पौंड़*** के लगभग होता है ।

◆ मनुष्य श्वास में ***आक्सीजन गैस*** लेते हैं ।

◆ हम श्वास में ***कार्बन डाईऑक्साइड गैस*** छोड़ते हैं ।

◆ रक्त में लाल कणों की कमी से ***एनीमिया*** रोग हो जाता है ।

◆ डॉक्टर नब्ज ***रक्त आयतन*** जानने के लिए देखता है ।

◆ हैजा के विषाणुओं की खोज ***रोनाल्ड रॉस*** ने की ।

◆ मनुष्य के शरीर में रक्त का मुख्य काम ***कोशिकाओं को ऑक्सीजन*** पहुँचाना है ।

◆ एड्स के विषाणु की खोज (वाइरस HTLV-III) ***लक मांटेनियर*** ने की।

◆ मनुष्य के शरीर में सबसे बड़ा अंग ***यकृत (जिगर)*** है ।

◆ आँख में स्थित ***लेक्रिमल ग्रंथी में रोते समय स्राव*** होने लगता है, इसी कारण रोने पर आँसू आ जाते हैं ।

◆ मनुष्य का दिल चौबीस घंटे में ***1,03,689*** बार धड़कता है ।

◆ मनुष्य शरीर में ***750*** मांसपेशियाँ होती हैं ।

◆ मनुष्य के नेत्र एक मिनट मे करीब ***पच्चीस*** बार झपकते हैं ।

◆ मनुष्य के बाल एवं नाखून काटते समय ***दर्द नहीं*** होता, क्योंकि उनमें नसें नहीं होती हैं ।

◆ सामान्यतः पूरूष के मस्तिष्क का वजन ***3.5 पौंड़*** और स्त्री के मस्तिष्ख का वजन ***2.5 पौंड*** होता है ।

◆ मनुष्य की खोपड़ी में ***22*** अस्थियाँ होती हैं ।

◆ रीढ़ में अस्थियों की कुल संख्या ***33*** हैं ।

◆ एक स्वास्थ्य व्यक्ति के शरीर में ***5*** से ***6*** लीटर खून की मात्रा होती है।

◆ चेहरे पर बनी भौहें ***पसीने को आँखों*** में जाने से रोकती हैं ।

◆ हमारे सिर पर बोलों की संख्या ***एक लाख से दो लाख*** तक होती है, ये प्रतिमाह आधा इंच बढ़ते हैं ।

◆ दो सामान्य गुर्दों में ***20 लाख*** नन्हीं-नन्हीं रक्त छानने वाली छन्नियाँ होती हैं, जो प्रतिदिन ***50 गैलन*** रक्त छानती हैं ।

◆ बीच की उंगली का नाखून सबसे ***तेजी*** से और अँगूठे का नाखून सबसे ***धीमी*** गति से बढ़ता है ।

संजीवनी बूटी
तुलसी

◆ तुलसी एवं अदरक के रस को शहद में सुबह-शाम लेने से चक्कर आने में लाभ होता हैं ।

◆ तुलसी के रस की 5 बूँद एक चम्मच शहद या चीनी एक कप पानी में मिलाकर पीने से चक्कर आने पर आराम मिलता है। लगातार तीन-चार दिन लें ।

◆ तुलसी के पत्तों के 6 ग्राम रस में 1 ग्राम पिसी हुई अजवाइन मिलाकर खिलाने से रूकी हुई चेचक बाहर निकल आती है तथा चेचक का ज्वर कम रहता है ।

◆ प्रतिदिन सुबह तुलसी के पत्तों का रस पीने से फैलने वाली चेचक का भय नहीं रहता ।

◆ तुलसी की जड़ को गंगाजल में पीसकर दिन में दो बार, एक-एक चम्मच चेचक (माता) के रोगी को पिलायें ।

◆ तुलसी पत्र को चावल के धोवन में पीसकर पिलाने से चेचक जनित जलन और बेचैनी दूर हो जाती है ।

◆ केवल तुलसी रस का ही लेप करें तो भी चेचक के दाने, घाव शान्त होकर जल्दी सूख जाते है ।

◆ तुलसी के पत्ते व अजवाइन को पीसकर प्रतिदिन लेप करने से लाभ होगा ।

◆ जब चेचक या माता फैल रही हो उस समय नित्य सवेरे तुलसी के पत्तों का रस पीना अच्छा है ।

◆ तुलसी की मंजरी ग्राम, मेथी ग्राम, कूट ग्राम-इन तीनों को चौगुने पानी में उबालें । जब चौथाई रह जाये तो छान कर चेचक में ज्वर होने पर पिलायें ।

◆ खसरा, बड़ी व छोटी चेचक में पीड़ा की प्रथमवास्था में वन तुलसी के क्वाथ का पान करने से लाभ होता है ।

हिन्दी शब्द-समूह का वर्गीकरण

हिन्दी का शब्द-भण्डार विपुल और विशाल है। उनमें विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों के शब्द हैं । इस कारण उसका शब्द-भण्डार कुछ जटिल भी हो गया है ।

हिन्दी एक संरचनात्मक भाषा है । इससे अन्य भाषाओं की अपेक्षा वह कुछ विशिष्टता भी रखती है । अध्ययन की सुविधा के विचार से हिन्दी के शब्द-समूह को निम्नलिखित छह वर्गों में विभक्त किया जा सकता हैं-

(1) तत्सम शब्द-समूह ।

(2) तद्भव शब्द-समूह ।

(3) देशज या देशी शब्द-समूह ।

(4) विदेशी शब्द-समूह तथा

(5) अनुकरण-वाचक शब्द-समूह ।

(6) अनार्य भाषाओं के शब्द ।

शब्द-समूह के विभिन्न वर्ग

(1) तत्सम शब्द-समूह- डॉ० उदयनारायण तिवारी के शब्दों में ''वस्तुतः तत्सम् शब्द वे शब्द हैं जो नव्य आर्य भाषाओं में संस्कृत से उसी रूप में लिए गए हैं ।''

संस्कृत हिन्दी-शब्दों का मूल एवं मुख्य स्त्रोत है । हिन्दी में अनेक शब्द सीधे संस्कृत से आए हैं । संस्कृत से ज्यों के त्यों रूप में आने वाले शब्दों को तत्सम शब्द कहाजाता हैं । हिन्दी में ऐसे शब्दों का आधिक्य है । हिन्दी को शब्द-समूह में आधे से अधिक शब्द संस्कृत के तत्सम शब्द हैं, यथा-सूर्य, खान, तीक्ष्ण, तीव्र, मति, गति, सिशु इत्यादि ।

(2) तद्भव शब्द-समूह- 'तद्भव' का शब्दार्थ है 'उससे उत्पन्न', अर्थात वे शब्द जिनका मूल संस्कृत है, परन्तु विभिन्न प्रभावों के कारण जिनका रूप भिन्न हो गया है । संस्कृत से आए हुए ऐसे शब्द जो प्राकृत की विशेषता से प्रभावित होने के कारण मूल संस्कृत से भिन्न रूप वाले हैं, 'तद्भव' कहलाते हैं । डॉ० उदय नारायण तिवारी के अनुसार, ''हिन्दी तथा अन्य नव्य भारतीय आर्य भाषाओं में तद्भव वे शब्द हैं, जो इन भाषाओं में मूल संस्कृत से प्राप्त होते हुए हैं ।'' यथा-

संस्कृत	प्राकृत	तद्भव
अद्य	अज्ज	आज
अग्नि	अगिन	आग
पूष्प	पुष्प	फूल
कार्य	कज्ज	काज
हस्त	हत्थ	हाथ

(3) देश या देशी-समूह- देश के बोलचाल के वे शब्द जिनकी व्युत्पत्ति का ठीक-ठीक पता नहीं चलता है, 'देशज' कहलाते हैं । इन्हें ग्रामीण शब्द भी कहते हैं । हिन्दी में प्रयुक्त इस वर्ग के शब्दों की संख्या पर्याप्त है, यथा-डिबिया, डोंगा, भाव, लोटा, पगड़ी, तेन्दुआ, जूता इत्यादी ।

(4) विदेशी शब्द-समूह- हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्त अनेक विदेशियों के सम्पर्क मे सैकडों वर्ष तक रहा है । मुसलमान और अंग्रेज शासकों की राजधानियाँ इसी प्रदेश में रही हैं । अतएव हिन्दी के ऊपर मुसलमानी तथा यूरोपीय भाषाओं का व्यापक प्रभाव पड़ा है और उन भाषाओं के अनेक शब्द हिन्दी में लोकप्रिय रूप में प्रयुक्त होने लगे हैं । इन्हीं शब्दों को विदेशी या विदेशज कहते हैं । वे शब्द जो विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आए हैं, विदेशज शब्द कहलाते हैं ।

हिन्दी एक संरचनात्मक भाषा (Building Language) है । हिन्दी में अनेक विदेशी भाषाओं के शब्द खुलकर प्रयुक्त होते हैं, रूप यथा-

अंगरेजी -टिकट, अंजन, बिल्टी, रपट, सिंगल, डाक्टर, अस्पताल, कलट्टर इत्यादी

पुर्तगाली -अल्मारी, कनस्तर, कप्तान, कमीज, फीता, गिरजा इत्यादि

फ्रेंच -कारतूस, अँगरेज, कूपन ।

डच -चिड़ी, तुरूप ।

स्पेन -अल्पका, सिगरेट, सिगार ।

तुर्की -कुली, उर्दू, चिक, चेचक, उजबक, मुगल आदी ।

अरबी -किस्सा, कीमत, दौलत, हैजा, मशहूर, मुसाफिर, महल, हलुआ।

फारसी -चाशनी, आमदनी, आफ़त, आवाज, पेशा, मुर्दा आदि।

कुछ शब्द जापानी और चीनी शब्दों के भी प्रयुक्त होते हैं। रिकशा शब्द जापानी भाषा का शब्द है तथा चाय और लीवी, चीनी भाषा के शब्द हैं ।

देशी विदेशी भाषाओं के योग से कई नये शब्द बन गये हैं जिनका हिन्दी में खुलकर प्रयोग होता है । डाकखाना, डाक-बंगला, शेवर-बाजार, रेल-मन्त्री, राजमहल आदि ।

इन शब्दों का विग्रह इस प्रकार है-

डाकखाना (डाक हिन्दी, खाना फ़ारसी) ।

डाकबँगला (डाक हिन्दी, बँगला अँगरेजी) ।

शेयर-बाजार (शेयर अँगरेजी, बाजार फ़ारसी) ।

राजमहल (राज संस्कृत, महल अरबी) ।

(5) अनुकरणवाचक शब्द-समूह- अनुकरणवाचक शब्द वे शब्द हैं जो किसी वस्तु या पदार्थ की वास्तविक या कल्पित ध्वनि के आधार पर निर्मित हुए हैं । कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो अपने मूल रूप की आवृत्ति मात्र हैं । इस वर्ग के अन्तर्गत कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो निरर्थक हैं, परन्तु, साम्य के आधार पर दुःख-सुख के कारण बना लिये गये हैं, यथा-

(क) **ध्वनि के आधार पर निर्मित शब्द-** सरसराना, फड़फड़ाना, चहकना, ललकारना, फटकारना, पटाका इत्यादि।

(ख) **अवृत्ति के आधार पर निर्मित शब्द-** धूम-धड़क्का, भीड़भाड़, खटपट, धक्का-मुक्का, नोंच-खरोंच इत्यादि ।

(ग) **साम्य के आधार पर निर्मित शब्द-** फौज-फाट, गँवार, संवार, चाँय-चूय, लोट-ओटा, रोटी-फोटी, खाद-वाद इत्यादि।

(6) अनार्य भाषाओं के शब्द-समय के प्रवाह के साथ तथा पारस्परिक सम्पर्क के फलस्वरूप हिन्दी में अनेक शब्द अनार्य भाषाओं से भी आ गये हैं । डॉ० उदयनारायण तिवारी का यह कथन हृष्टब्य है कि, 'आधुनिक भाषा-शास्त्रियों ने लगभग साढ़े चार सौ संस्कृत के ऐसे शब्दों को ढूँढ निकाला है जिनके अनार्य स्रोत्र हैं । आर्येतर भाषाओं से आने वाले शब्दों के उदाहरण ये हैं-

तमिल भाषा के शब्द -उपवास, पंक्ति अमाजसी ।

तेलगु भाषा के शब्द -आली, आलि, पिल्ला ।

मलयालम भाषा के शब्द -भंगी, चिल्लर ।

मुण्डा भाषा के शब्द -कोड़ी (बीस की संख्या का वाचक शब्द)।

निष्कर्ष- हिन्दी भाषा का शब्द-भण्डार विपुल एवं विशाल है । उसने विदेशी शब्दों का उदारतापूर्वक अपना कर अपने शब्द भण्डार की वृद्धि की है तथा अपने संरचनात्मक रूप को अक्षुण्ण रखा है । उदारतापूर्वक शब्द-ग्रहण करने की प्रकृति के कारण ही हिन्दी आज तक एक गतिशील एवं प्रगतिशील भाषा बन सकी है । अपनी इसी विशेषता के कारण वह इतना प्रबल विरोध होते हुए भी हमारे देश की राष्ट्र-भाषा है ।

बालकों की शिक्षा एवं चरित्र-निर्माण में माता-पिता की भूमिका

देश में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार जिस गति से हो रहा हा है, लगभग उसी गति से मानव चरित्र एवं मानव मूल्यों का ह्रास होता दृष्टिगोचर हो रहा है । स्वार्थपरता, अनुशासनहीनता, अनैतिकता, हिंसा, चोरी, लूट-पाट आदि की खबरों से समाचार-पत्र भरे रहते हैं। सभ्यता एवं संस्कृति के केन्द्र कहे जाने वाले नगरों में ये दुष्प्रवृत्तियाँ ग्रामों के अशिक्षित, अनपढ़ ल्यक्तियों की अपेक्षा कीं अधिक मात्रा में विद्यमान हैं । विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, अनुशासनहीनता, उच्छृंखलता के जैसे गढ़ बनते जा रहे हैं । शिक्षित व्यक्ति का ससंस्कृत स्वरूप जैसे विलुप्त होता जा रहा है ।

प्रश्न उठता है- क्या आधुनिक शिक्षा इस दूषित वातावरण के लिए उत्तरदायी है । दर्शन के अनुसार शिक्षा का प्रथम उद्देश्य मनुष्य को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाना है और उसमें मानवीय गुँ का विकास करना है । परन्तु इन सबके विपरीत आज शिक्षा जगत में शिक्षित व्यक्ति में सर्वत्र विसंगतियाँ उभर रही हैं । शिक्षा अपना लक्ष्य पूरा करने में असफल सिद्ध हो रही है । ऐसे क्यों है ?

आधुनिक युग को इस ज्वलन्त समस्या पर गम्भीर विचार करने की आवश्यकता है । शिक्षा सम्बन्धी विसंगतियों के अन्य अनेक कारणों के साथ हमारी दृष्टि में इस असंगति का प्रमुख

कारण आधुनिक शिक्षा का उद्देश्यहीन होना है । आज की शिक्षा शिक्षार्थी में कोई अच्छे संस्कार नहीं जमा रही है और न उसका सुमुचित मार्गदर्शन कर पा रही है । चारों ओर एक भटकन की-सी स्थिति दिखाई देती है ।

शिक्षा में विसंगतियों या चरित्र-विकास के अभाव का महत्त्वपूर्ण कारण बालकों की समुचित शिक्षा एवं चरित्र-निर्माण के प्रति माता-पिता की उपेक्षा और उदासीनता है । इस बिन्दु पर तनिकि विस्तार से चर्चा करना ही इस लेख का उद्देश्य है।

माता की भूमिका- बच्चों की आदि- गुरू या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शिक्षक उसकी माता है, जो बाल्यावस्था में बच्चे का सम्यक् लालन-पालन करके उसे विद्याध्ययन के योग्य बनाती है । इसी अवधि में माता बच्चे में वह संस्कार डालती है, जो आजन्म उसके चरित्र विकास में योगदान देते हैं । बच्चे को सम्यक् रूप से उठने-बैठने, खाने-पीने, किसी बस्तु को बिना काम न छुने या उठाने, बड़ों के प्रति आदर भाव रखने, अपने से छोटे बच्चों को प्यार करने आदि की शिक्षा माता ही देती है । कच्ची उम्र में बच्चा माँ से अत्यधिक लगाव के कारण इन बातें को बड़े चाव से सीखता है और बड़े होने पर यही बातें उसका स्वभाव या संस्कार बन जाती हैं ।

किन्तु खेद की बात यह है कि आधुनिकता की अन्धी दौड़ में माता की यह भूमिका दिन-प्रतिदिन समाप्त होती जा रही है । तीन वर्ष और कभी-कभी दो वर्ष की आयु में 'नर्सरी स्कूल' में बच्चों को भेचकर माता अपने उत्तरदायित्व से छुटकारा पाने लगी है । दो-तीन घण्टों के लिए बच्चों को स्कूल भजकर उनका सिरदर्द जैसे दूर हो जाता है । उनके लिए घर के अन्य काम बच्चे की समुचित शिक्षा की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण हो गये हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि बच्चों का लालन-पालन पहले की अपेक्षा अब अधिक ढंग से होने लगा है, किन्तु यह अच्छा खाने, अच्छे कपड़े और अच्छे स्कूल की चिन्ता तक ही सीमित हैं । उनकी समुचित शिक्षा, उनके उत्तम चरित्र-विकास की कोई भूमिका यहाँ नहीं है । इतनी छोटी आयु में बच्चा इन स्कूलों में जो कुछ सीखता है उसकी तुलना में ऐसे तत्त्व उसमें अधिक मात्रा में पनप जाते हैं जो अवांछनीय हैं । कुछ बच्चे ऐसी भद्दी हरकतें और भद्दी गालियाँ देते हैं जिनका इस स्थिति में उसे अर्थ भी मालूम नहीं । इस स्थिति में माता की आत्मीयता, शिक्षा एवंममता के अभाव में बच्चा मानवीयता का प्रथम पाठ ही नहीं सीख पाता। उसके चरित्र विकास की दिशा खो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे अनुशासित हों, सत्यवादी हों, गुणवान हों तो माता की पूर्ण सतर्कता बहुत आवश्यक है। बच्चे में भारतीयता के संस्कार जमाना उसका प्रथम कर्तव्य है।

पिता की भूमिका - बच्चे की रुचि, प्रवृत्ति आदि की पूरी निगरानी का दायित्व पिता का है। विद्यालय में प्रवेश दिलाने के बाद बच्चे की एक एक गदिविधि से परिचित रहने वाले अभिभावकों के बच्चे संस्कारवान हो सकते हैं। पढ़ने वाले बच्चे की विकास गति क्या है? अध्यापकों के साथ कैसा व्यवहार है? गृहकार्य नियमित करता है या नहीं? कैसे बच्चों के साथ उठता बैठता है? विद्यालय में उसकी उपस्थिति ठीक है या नहीं। पढ़ने की पूरी पुस्तकें, कापी आदि उसके पास हैं या नहीं। उसकी त्रैमासिक, छमाही, वार्षिक रिपोर्ट कैसी है? किस खेल में, किस अतिरिक्त गतिविधि में उसकी रूचि है? उसकी मित्र मण्डली कैसी है? इन सब बातों के प्रति यदि पिता जागरूक है तो कोई कारण नहीं कि बच्चा अनुशासनहीन या उच्छृंखल बने।

आधुनिक माता पिता इतने व्यस्त हैं कि उन्हें न बच्चों के मनोरंजन का कोई ध्यान है और न ही उन्हें सुसंस्कृत बनाने को समय है। बच्चे माता पिता के प्यार एवं निकट सम्पर्क के लिए कभी कभी तरस जाते हैं। बहुत से अभिभावकों को यह भी पता नहीं रहता कि उनका बच्चा किस कक्षा में पढ़ रहा है। उनकी उत्सुकता मात्र परीक्षा परिणाम तक ही सीमित रह गई है।

ज्ञान का विस्तार या कहिए शिक्षा का विस्तार जिस तीव्र गति से हो रहा है ौर शिक्षा के जितने उन्नत विविध साधन बच्चों को मिल रहे हैं, उसमें आवश्यकता है माता पिता के पूर्ण सहयोग की, बच्चों को अच्छे मार्गदर्शन की, ममत्व और दुलार की। माता-पिता की उचित देख-भाल के अभाव में आज हमारे बच्चे लक्ष्यविहीन होते जा रहे हैं। यदि अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा एवं उनके चरित्र निर्माण में अपना उत्तरदायित्व निभाएँ तो निश्यर ही एक अच्छी पीढ़ी की आशा बन सकती है ।

डॉ० प्रदीप कुमार पानेरी, (सहायक आचार्य)
उदयपुर (राजस्थान)

हँसी के फूल

★ श्रीमान् जी का छोटा लड़का अपनी उम्र के हिसाब से कुछ ज्यादा ही होशियार था । एक दिन घर आया तो उसके हाथ में लाइब्रेरी की एक पुस्तक थी-''बच्चों का लालन-पालन ।''

उसकी मां ने आश्चर्य से पूछाः 'क्यों मुन्ने इस पुस्तक का तुम क्या करोगे?'

मुन्ने ने जवाब दियाः 'मैं इसे पढ़कर जानना चाहता हूँ कि मेरा पालन-पोषण उचित तरीके से किया जा रहा है या नहीं ।'

★★★

★ डाक्टर : आप पिछली बातें भूल जाइये । तनाव अपने-आप कम हो जायेगा । देखिए, मेरे ऊपर मेरे पिछले मकान-मालिक का रूपया 500/- बाकी था । मैंने बिल चुकाने की चिन्ता छोड़ दी और फौरन तनाव से मुक्ति पा ली ।

मरीज़ : कोई दूसरा उदाहरण दीजिये! यह घटना तो मैं जानता हूँ ।

डाक्टर : वह कैसे ?

मरीज : मैं ही तो वह मकान मालिक हूँ जिसका उधार आप पर है ।

★★★

★ राजीव - मां! संजय ने मेरी गुड़िया तोड़ दी ।

मां - संजय ने गुडिया कैसे तोड़ दी?

राजीव - मैं ने गुड़िया उसके सिर पर मारी थी ।

★★★

★ नौसिखिया डाक्टर-आपकी बीमारी का कारण समझ में ही नहीं आ रहा ।

दरअसल मैं तो समझता हूं यह नशे की वजह से है ।

मरीज - कोई बात नहीं । जब आप होश में होंगे तब आ जाऊंगा ।

★★★

मरीज़ : डाक्टर साहब, आपने तो गज़ब कर दिया । जो दांत आपने उखाड़ा है, वह नहीं। मुझे तो ऊपर से तीसरा दांत उखड़वाना था ।

डाक्टर : घबराइये नहीं, मैं बारी-बारी से उसी दांत को उखाड़ने जा रहा हूं ।

यादगार नग़मे

*फिल्म : **शोले***
*गायक : **किशोर***
*गीत : **आनन्द बख्शी***
*संगीत : **आर० डी० बर्मन***

कोई हसीना जब रूठ जाती है तो तो तो
और भी हसीन हो जाती है
स्टेशन से गाड़ी जब छूट जाती है तो
एक दो तीन हो जाती है
कोई हसीना....
हाथों में चाबुक होठों पे गालियां
बड़े नखरे वालियां होती हैं तांगे वालियां
कोई तांगे वाली जब रूठ जाती है तो तो
और नमकीन हो जाती है
कोई हसीना.....
जुल्फों में छैय्या मुखड़े पे धूप है
बड़ा मजेदार गोरी ये तेरा रंग रूप है
डोर से पतंग जब टूट जाती है तो तो
रूत रंगीन हो जाती है
कोई हसीना.....

⌘⌘⌘

WANTED

Applications can be invited from the Degree Candidates for the post of District Organisers. Apply with full biodata & 2 passport size photos within 7 days. Salary : 5,000/-+.

SHANTI PRINTERS & PUBLISHERS
Gunadala, VIJAYAWADA-4.
Ph : 2451611, 94400 33910

MY DREAM
it's my school magazine....

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण वायुमण्डलीय, जीव विज्ञान सम्बन्धित, पारिस्थितिक एवम् भौतिक अवयवों का एक तर्कपूर्ण संयोजन है, जो हमारी धरा को एक जीवित ग्रह बनाये रखने में सहायता करते हैं । यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि हमारी धरती का पर्यावरण इतना दूषित हो चुका है कि उसमें सुधार लाना कठिन प्रतीत होता है । यदि पर्यावरण में हास को नियंत्रित करने के लिए गम्भीर प्रयास नहीं किये गये तो हमारा ग्रह किसी भी प्रकार के जीवन को सम्बल देने में अक्षम हो जायेगा ।

इस समय, इस 'जीवित ग्रह' पर हम करीब छः बिलियन मानव विचरण कर रहे हैं । नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या के दबावों को अविकसित और गरीब देशों में भली-भांति देखा जा सकता है । शहरों की गन्दगी, वायु प्रदूषण और भोजन के प्रदूषण (जो कि मानवों के द्वारा ही पैदा किये गये हैं) ने उनके अपने ही प्राणों को खतरें में डाल दिया हैं । आंत्रशोध, फेफड़ों का कैंसर, अमीबियॉसिस और आंखों से सम्बन्धित रोग बढ़ रहे हैं । यह मुख्यतः वायु, जल और भोजन के प्रदूषण की वजह से हैं, जिसके लिए बढ़ती हुई जनसंख्या पूर्णरूपेण जिम्मेदार है ।

वायु प्रदूषण वाहनों, कारखोनों, घरों, तापीय ऊर्जाघरों और वायुयानों से उत्पन्न होता है । ओजोन गैस की परत, जो पराबैंगनी किरणों से हमें बचाने के लिए अत्याधिक महत्त्वपूर्ण है, धरती कें दोनों ध्रवों पर क्षीण हो चुकी है । अतः हम चर्म कैंसर और छाती के रोगों के आसानी से शिकार बन सकते हैं। विश्व की सभी नदियों में जल प्रदूषित हो चुका है । गंगा, यमुना और भारत की अन्य प्रमुख नदियां बीमारियां फैलाने वाली नालियां बन चुकी हैं । घरों और कारखानों की वजह से

SAVING THE ENVIRONMENT

Environment is the logical sum total of atmospheric, biological, ecological and physical factors, which help our earth remain a living planet. Unfortunately, the environment of our Earth has been degraded beyond repair. If serious efforts were not made to check the environmental decay with immediate effect, our planet would not be able to sustain life in any form.

We are more than six billion humans on this living planet. Population pressures are more prominent in the urban dwellings of underdeveloped and poorest nations. Urban sewage, air pollution and food contamination (generated by human population) have already threatened their own lives. The cases of dysentry, lung cancer, amoebiosis and opthalmic diseases are on the rise. These are basically due to pollution of air, water and food for which, the rising population levels are squarely responsible.

Air pollution is created by polluting vehicles, factories, households, thermal power stations and jet aircraft. The ozone layer, so vital for protecting us from ultra violet rays, has been depleted at the poles of the Earth. So, we are more vulnerable to skin cancer and chest infections. Water is polluted is almost all the major rivers of the world. The Ganges, the Yamuna and other major rivers of India have become disease-spreading drains. Water has been polluted due to drainage from the households, factory pollutants and improper treatment of water by the civic authorities. This contaminated water (underground as well as over the ground) has generated diseases among children and women, many of which cannot te reversed.

Food has been contaminated by man himself.

और अधिकारियों द्वारा जल के गलत प्रकार से परिशोधन करने की वजह से जल दुषित हो चुका है । यह दूषित जल (धरती के नीचे और धरती के ऊपर) बच्चों और औरतों में ऐसी कई बीमारियां उत्पन्न कर चुका है, जिनमें से कई बीमारियों का इलाज संभव नहीं है ।

भोजन को मानब ने स्वयं ही प्रदूषित किया है । खतरनाक रसायन, खतरों से परिपूर्ण कृषि कार्यालाप और जल तथा वायु प्रदूषण घटिया किस्म के खाद्यान्नों, मुख्य फसलों, फलों और सब्जियों का उत्पादन करते हैं । लोग यह भोज्य पदार्थ ग्रहण करते हैं और अक्सर बीमार पड़ जाते हैं, कभी-कभी तो वे अपने प्राण भी गंवा देते हैं । केवल दिल्ली प्रदेश में ही करीब 35 लोगों को सरसों के तेल में आर्गेमोन की मिलावट के कारण अपने प्राण गंवाने पड़े । विश्व के सभी प्रमुख नगरों का पर्यावरण गंदा रहता है और मानवजीवन अथवा पशुजीवन को जीवन देने में असफल है । परन्तु यह गन्दगी (पश्चिमी देशों में भी) साफ नहीं की जाती । इसके अलावा, यूरोप और कनाडा में सैकड़ों झीले, पारे, सीसे और जस्ते की वजह से प्रदूषित हो चुकी है । पश्चिमी देश भी विभिन्न प्रकार के प्रदूषण के लिए बराबर रूप से जिम्मेदार हैं और उनके नागरिक इन गलतियों के फल भोग रहे हैं ।

पर्यावरण का हास सभी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वार्ताओं में एक मुख्य मुद्दा है । जल, वायु और भोजन में प्रदूषण को नियंत्रित करने की तुरंत आवश्यकता है । इसके अलावा, ध्वनि प्रदूषण नागरों में रहनेवालें लोगों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरे बन चुका है ।

हमें संसार में प्रदूषण और पर्यावरण में आये हास को नियंत्रित करने के लिए बहुमुखी नीति अपनानी होगी । भारत सरकार ने पहले से ही उन व्यावसायिक वाहनों को बेकार करने का आदेश दिया है जिनकी आयु 15 वर्ष से अधिक है । प्रदूषण नियंत्रण से सम्बन्धित मापदंड और कड़े कर दिये गये हैं । वे उद्योग, जो खतरनाक रसायन पैदा करते हैं, मुख्य नगरीय क्षेत्रों से बाहर पुर्नस्थापित किये जा रहे हैं । वायु और जल का प्रदूषण कम करने के लिए तकनीकें विकसित की गई हैं । ये तकनीकें विभिन्न समाजों, उद्योगों और राष्ट्रों द्वारा अपनाई जा रही हैं । वैकल्पिक ईंधन, जैसे कि सी०एन०जी० गैसोहोल, मीथेन, बैटरी ऊर्जा, सूर्य की ऊर्जा और ज्वारभाटा की ऊर्जा भी इस्तेमाल में लाये जा रहे हैं, परन्तु इन सब को इस्तेमाल करने की मात्रा न के बराबर है फिर भी इससे हमारी परंपरागत और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम हो जायेगी । लोगों को

The harmful chemicals, dangerous agricultural practices and pollution (of air and water) have led to the production of poor quality cereals, major crops, fruits and vegetables. People eat these food items and fall sick quite frequently, sometimes losing lives as well. In Delhi alone, nearly 35 people died recently due to adulteration of mustard oil with argemone. The habitat of most of the major cities of the world remains dirty and unworthy of supporting humans or animal life. But this filth is not removed (even in the Western nations). Further, several hundred lakes have been contaminated (with chemicals like mercury, lead and zinc compounds) in Europe and Canada. The Western nations are also equally responsible for generating various types of pollution and their residents are paying the price for these follies.)

Environmental decay is a major issue at all the national and global fora. There is an urgent need for curbing the pollution levels in water, food and air. Further, sound pollution has also become a major threat to the mental health of urban residents. We would have to adopt a multi-pronged strategy in order to fight pollution and environmental degradation in the world. The Indian government has already ordered the scrapping of commercial vehicles, which are more than fifteen years old. Pollution control norms have been made more strict. Industries, which spew out harmful chemicals, are being relocated outside the major urban centres. Technologies for reducing pollution of air and water have been developed. These are being adopted by the society, the industries and the nations. Alternative fuels like CNG, gasohol, methane, DC power, solar energy and tidal energy are being exploited, albeit to a small extent, in order to reduce our dependence on fossil fuels. People would have to pay extra attention to environmental issues as they directly affect the health and future of our posterity.

It is true that more people have become sensitive towards the growing menace of pollution and environmental decay. But merely knowing about this problem would not solve it. The masses of the world would have to take concrete steps to control pollution of food, air and water. Natural manures, for

पर्यावरण से सम्बन्धित मुद्रों पर अधिक ध्यान देना होगा क्योंकि ये मुद्रे हमारी आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य और भविष्य पर सीधे तौर पर प्रभाव डालते हैं ।

यह सच है कि अधिक लोग प्रदूशण व पर्यावरण के हास की विकट समस्या के प्रति जागरूक हो गये हैं । परन्तु इस समस्या के विषय में केवल जानकारी रखना ही इसका निदान नहीं कर पायेगा । विश्व के जनसाधारण को भोजन, वायु और जल के प्रदूषण को नियंत्रित करने हेतु ठोस कदम उठाने होंगे। उदाहरण के तौर पर, प्राकृतिक खादें फसलों को विषयुक्त होने से बचायेंगी । परन्तु हम अप्राकृतिक खादें इस्तेमाल किये जा रहे हैं और अप्राकृतिक भोज्य पदार्थों का निर्माण कर रहे हैं । इसी प्रकार, समाज के अन्य वर्गों को, अपनी क्षमताओं के अनुसार, इस शुभ उद्देश्य के लिये अपना योगदान देना चाहिये । भविष्य में धरती के प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ेगा, जिससे खतरनाक प्रदूषण स्तर देखने को मिलेंगे । हमें पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों, तकनीकों और सिद्धान्तों का प्रयोग करना होगा ।

अमीर देशों के पास इन समस्याओं के निदान के लिये तकनीकें, धन व मानव संसाधन हैं । परन्तु वे गरीब देशों के साथ इनको बांटने के लिये पर्याप्त कीमतों की मांग करते हैं । विकसित और धनी देशों के द्वारा इस नीति को समाप्त किया जाना चाहिए। अन्त में, सरकारों को उन व्यक्तियों, कारखानों और व्यापारिक संस्थानों के साथ सख्ती से पेश आना चाहिये जो जानबूझ कर अथवा अनजाने में पर्यावरण को खराब करते हैं । किसी भी राष्ट्र ने अपरम्परागत उर्जा स्त्रोतों का उपयोग करने हेतु ठोस कदम नहीं उठाये हैं । ये स्त्रोत पर्यावरण के हास से सम्बन्धित कठिनाईयों को दूर कर सकते हैं । इसके अलावा, यदि ये कदम तार्किक रूप से व निष्ठापूर्वक उठाये जायें, तो हम वर्तमान सदी की ऊर्जा से सम्बन्धित आवश्यकताओं को भी पूरा कर सकेंगे । उदाहरण के तौर पर, भारत ने परमाणु ऊर्जा की उत्पादन क्षमता (Installed Capacity) को सन् 2020 तक 20,000 मैगावाट तक करने का निर्णय लिया है । अन्य देशों को भी भारतीय उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए । ज्वारभाटा, जैव-ऊर्जा और समुद्र की ताप ऊर्जा भी विद्युत एवं यांत्रिक ऊर्जा के स्वच्छ स्त्रोत हैं ।

कुल मिला कर, हमारी धरती का पर्यावरण सरकारों, पर्यावरण का संरक्षण करने वाली कम्पनियों, गैर-सरकारी संस्थानों और समाज के मिले-जुले प्रयासों से संरक्षित हो सकेगा । हमें प्राथमिकताओं और क्रियान्वयन-कार्यक्रमों को जितनी जल्दी हो सके निर्धारित करना होगा । ❖❖❖

example, would reduce poisoning of the crops. But we continue to use synthetic manures and create arti ficial foods.

Similarly, other sections of society would have to contribute, depending upon their abilities, towards this noble cause. In future, pressures on the natural resources of the Earth would mount, thus leading to dangerous pollution levels. We would have to use eco-friendly products, technologies and concepts.

Rich nations do have the technologies, finances and manpower for solving these problems. But they demand adequate compensation for sharing these with the poor nations. This policy must be done away with by the developed and rich nations. Finally, the governments must treat those individuals, industries and business firms with an iron hand, who degrade the environment either unknowingly or deliberately.

None of the nations of the world has taken concrete steps to use non-conventional energy sources. These sources can eliminate the threats of environmental decay. Moreover, these measures, if taken logically and with commitment, would also meet the energy needs of the present century. For example,India has decided to increase the installed capacity for nuclear power generation up to 20,000 MW by the year 2020. Other nations must follow the Indian example. Tidal energy, biomass energy and ocean thermal energy are also clean sources of electrical and mechanical energies.

In sum, environment of our Earth could be saved through Joint efforts of the Governments, environmental control firms, NGOs and the society at large. We would have to define priorities and action plans as soon as is possible. ❖❖❖

MY DREAM
it's my school magazine....

क्या निजीकरण द्वारा शिक्षा में सुधार सम्भव है?

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मानव की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्ति प्रदान करना है । आज की शिक्षा का उद्देश्य स्वाभाविक विकास क्रम न रहकर अनेक प्रकार की जानकारियों के ढ़ेर-के-ढ़ेर समेटने के रूप में हो गया है ।

यह सच है कि आज शिक्षा विषमता और भ्रष्टाचार से भरी हुई है । शिक्षार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक तीनों ही अपने आदर्श मार्ग से भटक रहे हैं । माननीय मानव संसाधन विकास मन्त्री कपिल सिब्बल ने उच्च शिक्षा और स्कूली शिक्षा में सुधारों के जो संकेत दिये है, उनसे देश के बौद्धिक हलकों में खलबली मची हुई है । कोई माननीय मन्त्री जी के विचारों से सहमत है तो अधिकांशतः इस विचार का विरोध कर रहे हैं । उन्होंने हाईस्कूल की बोर्ड परीक्षा को वैकल्पिक करने का जो सुझाव दिया है तथा ग्रेडिंग द्विति लागू करने का जो संकेत दिया है, उससे पहले राज्य सरकारों से सलाह-मशवरा लेना आवश्यक था । शिक्षा विषय संविधान की समवर्ती सूची में है, केन्द्र सरकार इसमें अपनी मर्जी कैसे थोप सकती है । १०० करोड़ से ज्यादा आबादी वाले देश में विभिन्न संस्कृतियाँ व परम्पराएँ हैं । सैकड़ो भाषाएँ-बोलियाँ हैं । ऐसे में एक तरह की शिक्षा की वकालत करना अनुचित है और यह सम्भव भी नहीं है। यह हमारे संविधान की मूल भावना के भी विरूद्ध है, जो विविधता में एकता की वकालत करता है ।

वास्तव में सरकार पश्चिमी देशों के माँडल पर चलना चाहती है, जबकि विविधताओं से भरे इस भारत देश में शिक्षा का पश्चिमी मॉडल नहीं चल पाएगा । यहाँ की स्थानीय जरूरतों को समझना जरूरी है। इस क्षेत्र में अत्यधिक निजीकरण और विदेशी विश्वविद्यालयों को यहाँ बुलाना तथा कुछ खास शैक्षिक संस्थाओं को विशेष दर्जा देना भी इसी रणनीती का हिस्सा है । शिक्षा के निजीकरण से जो अभी तक एकरूपता बनी हुई है वह भी खत्म हो जाएगी । गरीब बच्चे भी शिक्षा से वंचित हो जाएँगे । इसलिए जरूरत यह है कि वर्तमान ढाँचे को सुधारा जाए, न कि बदलाजाए ।

शिक्षा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश होने से शिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम एवं सुविधाओं को बाजारोन्मुखी बनाया जाएगा । कई देश जैसे-आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, अमेरिका ने अपने देशों के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों के शिक्षण केन्द्र भारत में भी खोलने प्रारम्भ कर दिये है । यहाँ भारतीय छात्र महँगी शिक्षा लेकर भारी भरकम फीस विदेशी संस्थानों को दे रहे हैं । इनसे निकले छात्रों को विदेशी कम्पनियाँ प्राथमिकता दे रही है । आगे चलकर भारतीय विश्वविद्यालयों से प्रतिस्पर्धा का माहौल बनेगा । यह दृष्टिगत् रखते हुए निजीकरण शिक्षा की ओर बढ़ावा दिया जा रहा है, परन्तु इससे भारत के सांस्कृतिक गौरव व स्वावलम्बन पर आघात लगेगा । राष्ट्रीय हितों को नुकसान पहुँचेगा । शिक्षा एक व्यापार बनकर रह जाएगी, पूँजीपतियों को एसी शिक्षा से गाढ़ी कमाई होगी ।

जो शिक्षाविद् शिक्षा के ढाँचे में मुल परिवर्तन करके इसके निजीकरण के हिमायती हैं, जो देश में भयमुक्त शिक्षा व्यवस्था कायम करना चाहते है, ऐसे लोग शिक्षा क्षेत्र की बुनियादी व्यवस्था को एक खुला बाजार बनाना चाहते हैं । लेकिन शिक्षा-व्यवस्था अर्थव्यवस्था नहीं है । यह आँकड़ों का खेल नहीं और न ही लाभ-हानि का खेल है । शिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त संवेदनशील है । अतः इसमें जल्दबाजी में छेड़छाड़ करना अनुचि होगा । अब जो निजी विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं, जो विद्यार्थियों को बहुत सब्जबाग दिखा रहे हैं, उन्होंने यह समझ लिया है कि निजीकरण ही हर मर्ज की दवा है । अब शिक्षा को शॉपिंग मॉल बनाया जा रहा है, शिक्षा को व्यापार बनाया जा रहा है, जो गलत है । अमरीकी व्यवस्था स्वयं अपने आप में असफल हो रही है । अतः शिक्षा में निजीकरण करने से सुधार सम्भव नहीं होगा ।

❖❖❖

डॉ. श्रवण सिंह
प्रधानाचार्य, जनहित इण्टर कॉलेज, गाजियाबाद

RNI No. APHIN/2007/19839

Postal Regd. No. VJ/101/2010-12
Posting Date 10th on every month.

कृपया ध्यान दे!
गौरवनीय सभी हिन्दी शिक्षकों से
हमारा विनम्र निवेदन है कि
अगले महीने की पत्रिका अपने
पते पर भेजने की
सुविधा हमें दिला दीजिए।
इसके लिए एक पोस्ट कार्ड पर
अपनापूरा पता व फोन नंबर सहित
शीघ्र हमें लिखें।भारतीय
समता हिन्दी प्रचार परिशद्,
केन्द्र कार्यालय, विजयवाडा-५२० ००४ को
भेजने की कृपा करें।
अन्यदा आपको पत्रिका भेजने में हमें
कष्ट होगी। समता परिवार

To

Request to the Post-man
Please deliver this book to
any Private or Govt., School

HINDI
MILANOTSAV
2009-10

PRINTED - BOOK

LEARN HINDI

BANGALORE - CHENNAI
VIJAYAWADA - HYDERABAD

समता परिवार
हिन्दी परिवार

समता हिन्दी आपका हार्दिक स्वागत करता है

समता हिन्दी प्रचार विभाग
केन्द्र कार्यालय : गुणदल, विजयवाडा-५२० ००४.
नई दिल्ली

From :
Samata Hindi Prachar Vibhag
Central Office, Gunadala,
VIJAYAWADA - 520 004.
Ph : 0866-2451611, 9848352011.

Printed,Published and Edited by Principal S. Chandra Sekhar on behalf of Samata Hindi Prachar Vibhag, D.No. : 44-1-31A, Gunadala, Vijayawada - 520 004. Printed at Shanti Printers & Publishers, # 44-1-31A, Gunadala, Vijayawada-520004.
Editor : S. Chandra Sekhar.